International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
July-2017 Volume 4, Issue-4
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

तिब्बती यात्राओं के सम्बन्ध में राहुल सांस्कृत्यायन : एक यात्रा साहित्य

शोधार्थी:- नीति खरे

सहायक अध्यापक

कला विभाग

रुंगटा कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

रिसर्च स्कॉलर , कलिंगा विश्वविद्यालय रायपुर

सारांश

बीसवीं सदी में भारत के घुमक्कड़राज बने राहुल सांकृत्यायन ने देश-विदेश की जितनी यात्राएँ कीं और जितना यात्रा साहित्य लिखा उतना उनके पहले या बाद में अन्य यायावर के लिए संभव नहीं हुआ। उनके पावों में ऐसी जिजीविषा थी जो उन्हें निरन्तर यात्रा के लिए प्रेरित करते रहे। राहुलजी ने देश-विदेश की बार-बार यात्राएँ कों और उसके आधार पर बीस यात्रा साहित्य का रूपायन भी किया। वस्तुत: राहुल सांकृत्यायन असंदिग्ध रूप से सरस्वती के महान् वरद पुत्र थे, जिन्होंने तिब्बत से बौद्ध-ग्रन्थों के अपार भण्डार को उपलब्ध कराया। उनकी तिब्बती यात्राओं का उद्देश्य ही प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों की खोज थी। उसी प्रकार अध्यापन के लिए वे रूस गए, तब भी उनकी दृष्टि चारों ओर व्याप्त थी। यही नहीं भारतीय स्थलों की यात्रा पर केन्द्रित यात्रा साहित्य में भारतीयता की प्रतिध्वनि मुखरित है। वामपंथ के समर्थक होने पर भी राहुलजी भारतीयता के प्रति गहन आस्था रखनेवाले थे, जिस धरती या मिट्टी में उनका जन्म हुआ है उस भारत के प्रति गहन आस्था थी। राहुलजी ने बीस यात्रापरक कृतियों की रचना की है। उनकी राय में "तिब्बत में सवा वर्ष! इन कृतियों में सर्वोत्तम है क्योंकि वह सबसे साहसिक और सनसनीखोज यात्रा थी।

प्रस्तावना

राहुलजी की तिब्बत यात्राएँ सर्वाधिक रोमांचक यात्राएँ मानी जाती है। बौद्ध संस्कृति के तिब्बती स्वरूप, लामाओं की परम्परा, तिब्बती चित्रकला के विविध आयाम आदि को शब्दों द्वारा अंकित करने में वे सफल हुआ है। उनकी तिब्बती यात्रा कृतियों के सम्बन्ध में डॉ. जानकी पाण्डेय ने लिखा है - "उनके यात्रा-वृत्तान्तों में अंकित तिब्बती बौद्ध संस्कृति का बहुलांध आज भी वहाँ चीनी आधिपत्य के बावजूद सुरक्षित नहीं है। ऐसी परिस्थिति में तथ्यात्मक यात्रा-वृत्तान्त तथा तिब्बत से बौद्ध संस्कृति के उनके द्वारा लाये गए अवशेष ऐतिहासिक दस्तावेज़ और सांस्कृतिक धरोहर की गरिया से मंडित रहेंगे। "" पाण्डेयजी का यह कथन सहीहै कि राहुलजी के तिब्बत यात्राओं से सम्बद्ध यात्रा साहित्य वहाँ की संस्कृति एवं समाज का दर्पण है।

उनके ये यात्रा साहित्य निम्नलिखित है :-

1. तिब्बत मे सवा वर्ष

2. मेरी तिब्बत यात्रा

3 यात्रा के पन्ने

4 एशिया के दुर्गम भूखण्डों में

1. तिब्बत में सवा वर्ष

लंका में रहकर बौद्ध वाडमय के गहन अध्ययन करने पर उन्हें . डॉ. जानकी पाण्डेय; राहुल सांकृत्यायन: घुमक्कड शास्त्र और यात्रावृत्त; तिब्बत जाने की प्रेरणा मिली। तिब्बती भाषा में अनूदित संस्कृत बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन अन्वेषण ही उनका लक्ष्य था। इस उद्देश्य से उन्होंने सन् 1929 ई. में नेपाल के रास्ते छुपे तिब्बत के ल्हासा पहुँचा जो उनको सबसे साहसिक और सनसनीखेज यात्रा थी। इसका वर्णन "तिब्बत में सवा वर्षः नामक कृति में किया गया है। वास्तव में ब्रिटिश, नेपाल और तिब्बत इन तीनों सरकारों की आँखों में धूल झोंककर ही वे ल्हासा पहूँचे। इस खतरनाक यात्रा का वर्णन करते हुए लिखा है – "यह नेपाल से तिब्बत जाने का युख्य रास्ता है। फरी-कलिङ्प्पोङ का रास्ता जब नहीं खुला था, तो नेपाल ही नहीं हिन्दुस्तान की भी चीज़ें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए जगह-जगह फौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं। "" उनके शब्दों से यह स्पष्ट है कि रास्ता कठिन होने पर भी अपरिचित नहीं थे। इस पुस्तक में यात्रा वृत्तान्तों के साथ तिब्बती जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण लेख-रिपोर्ताजों को भी संकलित किया गया है। यह ग्रन्थ दस अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय भारतीय यात्राओं से सम्बन्धित है, जिसमें कन्नौज, कौशाम्बी, सारनाथ, राजगृह, वैशाली, लुम्बिनी जैसे भारत के प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र आते हैं। नेपाल यात्रा से सम्बन्धित है दूसरा अध्याय। आगे तिब्बत यात्रा का विस्तार से वर्णन हुआ है। यात्रा वर्णन के साथ भारत और तिब्बत के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों पर भी प्रकाश डाला गया है। तिब्बत के विभिन्न स्थानों के वर्णन के साथ वहाँ के जनजीवन, राजनीतिक-सांस्कृतिक परिवेश और वहाँ की आर्थिक स्थिति का विस्तार से विवेचन किया गया है। बौद्ध धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों की खोज उनकी इस यात्रा का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य था। राहुलजी ने अपने सर्वोत्तम यात्रा ग्रन्थ के रूप में इस कृति को माना है।

2 मेरी तिब्बत यात्रा

सन् 1934 ई. के गर्मियों के दिन में राहुलजी दूसरी बार तिब्बत की ओर गए और सन् 1936 ई. में तीसरी तिब्बत यात्रा की। राहुलजी ने तीसरी बार तिब्बत से लौटने पर इस कृति की रचना की। पत्र शैली में रचित इस पुस्तक में ल्हासा, वाङः, सक्य, जेनम्, नेपाल आदि की यात्राओं का सुन्दर वर्णन है। अपने मित्र भदन्त आनन्द कौत्सल्यायन को लिखे एक पत्र से इसका आरंभ होता है। वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषताओं को उजागर करने के साथ तिब्बती भाषा पर भी प्रकाश डाला गया है। जैसे: ज़रूर ही" शब्द के लिए तिब्बती भाषा में "इन् - ची - मिन् - ची' शब्द का प्रयोग हुआ था। तिब्बती भाषा के उच्चारण को भी उन्होंने सोदाहरण व्यक्त किया था। जैसे: 'सो - नम् - ग्यल् - म् - छन्! का उच्चारण तिब्बती भाषा में "सोनम ग्यंर्ज' है। इस पुस्तक में तिब्बत के प्राकृतिक सौन्दर्य को भी उन्होंने छोड़ा नहीं। उनके शब्दों में "एक जगह नदी के आर पार सुन्दर इन्द्रधनुष उगा था। सौन्दर्य अद्भुत था। मालूम होता था दो पहाड़ों के स्तम्भ पर रंग बिरंगा मेहराव लगाया गया है।"" महापण्डित राहुल का भावुक व्यक्तित्व यहाँ उभर आया है। इस पुस्तक में तत्कालीन तिब्बती समाज की विवाह-प्रथा को राहुलजी ने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया था। सभी भाइयों की एक पत्नी होना वहाँ सर्वत्र दिखायी गयी है। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है - "तिब्बत में सभी भाइयों की एक पत्नी होने से घर और सम्पत्ति का बँटवारा नहीं होता। " वास्तव में सम्पत्ति को न बाँठने के लिए ही यह प्रथा प्रचलित थी। इसमें तिब्बती बौद्ध ग्रन्थों को खोज निकालने में जो सफलता प्राप्त हई, उस पर विस्तार से बताया गया है। सदियों से उपेक्षित और अन्धकार में पडे हुए बहुमूल्य बौद्ध-साहित्य को खोजकर लाने में उन्हें कितना कष्ट सहना पडा, वह अत्यन्त सराहनीय है।

3. यात्रा के पन्ने

तिब्बत से राहुलजी का अत्यन्त गहरा एवं भावनात्मक लगाव है। इसलिए ही सन् 938 ई. में चौथी बार तिब्बत के लिए प्रस्थान किया। इन यात्राओं के माध्यम से उन्होंने "यात्रा के पन्ने नामक पुस्तक लिखा। इसमें यात्राओं के साथ अपने मित्र भदन्त आनन्द कौत्सल्यायन को समय-समय पर लिखे पत्र भी संकलित है। पेरिस, जर्मनी, लंका तथा स्वदेश से लिखे इन पत्रों में समय और समाज का दस्तावेज़ीकरण है, साथ ही स्वदेशी यात्राओं का वर्णन भी है, जो राजस्थान तथा बिहार के अनेक ऐतिहासिक- सांस्कृतिक निधियों को सामने लाता है। तिब्बती लोगों की कलाप्रियता पर भी उन्होंने प्रकाश डाला है। "चाहे देखने में कितने ही मलीन और असंस्कृत- से मालूम होते हों, लेकिन जान पडता है, तिब्बती लोगों के खून में कला मिली हुई है। इसलिए वह बड़ी सुरुचिपूर्वक मकानों को सजाते हैं। दीवारों पर रंग और बेल-बूटे का काम, आल्यारियों के ऊपर भी कारु-कार्य और रंग, बर्तन चाहे मिट्टी के हों या धातु के, उनमें भी सौन्दर्य, बैठने-लेटने के आसन और सामने रखी जानेवाली छोटी चाय की चौकियाँ थी नयनाभिराम। "" राहुल महान साहित्यकार होने के साथ सभी कलाओं के प्रति समान रुचि रखनेवाले थे। इसलिए ही उनके यात्रा वर्णनों में विभिन्न देशों के लोगों की कलाप्रियता की जी खोलकर प्रशंसा की गई है। "अज्ञात तिब्बत" शीर्षक के अन्तर्गत तिब्बत की आर्थिक स्थिति, वहाँ बौद्ध धर्म का प्रवेश, तिब्बत-चीन समझौता, तिब्बत पर भारत का प्रभाव आदि विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। तिब्बत-चीन समझौते पर बल देते हुए उन्होंने लिखा है - "तिब्बत और चीन के बीच में जो समझौता हुआ है, उसमें तीन चीज़ें युख्य हैं - (1) तिब्बत और चीन के बीच एक मैत्रीपूर्ण सन्धि, (2) तिब्बत का चीनी अधिकारियों के साथ सहयोग और (3) दलाइ लामा और पण्-छेन् लामा का मिलकर काम करना। " तिब्बत में भिक्षुओं की तुलना में भिक्षुणियाँ ज़्यादा है। राहुलजी ने इसका कारण यही बताया है कि सभी भाइयों की एक पत्नी होने के कारण अविवाहित लड़कियाँ अधिकहै। वे भिक्षुणी बन जाती हैं। इस प्रकार तिब्बत की ऐतिहासिक - सांस्कृतिक मुद्दों को प्रकाश में लाने के साथ वहाँ की सामाजिक स्थिति का परिचय भी दिया है। सन् 933 ई. में बड़ौदा प्राच्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए वे गए। वहाँ से लौटते समय राजस्थान के ऐतिहासिक स्थानों को देखने की इच्छा हुई। इस कृति में राजस्थान की उस यात्रा का वर्णन भी है। भूकम्प पीडित बिहार, अजमेर, उदयपुर, उज्जैन आदि स्थानों का विवरणात्मक वर्णन उन्होंने प्रस्तुत किया है।

4. एशिया के दुर्गम भूखण्डों में

"एशिया के दुर्गम भूखण्डों में" राहुलली की सन् 1933 ई. से सन् 1937 ई. तक की सभी यात्राओं का संकलन है। इसमें मुख्यतः चार यात्राओं को संकलित किया गया है। पहली लद्दाख यात्रा है, जो "मेरी लद्दाख यात्रा" नाम से पृथक प्रकाशित है। इसमें लद्दाख के बौद्ध विहारों का विस्तार से वर्णन हुआ है। लद्दाख के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वहाँ के लोगों की वेश- भूषा का भी विस्तृत वर्णन है। दूसरी, तिब्बत की यात्रा है। इसमें ल्हासा, पाड़, सकक्य, जेनम् तथा नेपाल का वर्णन है। जो राहुलजी द्वारा सन् 1934 ई. में की गई दूसरी तिब्बत यात्रा है। पत्र शैली में इस यात्रा का वर्णन किया था। जिसमें अपनी कठिन यात्राओं एवं जिनकी उपलब्धियों के बारे में सविस्तार वर्णन किया है। इस यात्रा से उन्होंने जो सामग्रियाँ उपलब्ध की है, उन्हें प्रयाग म्यूज़ियम एवं पटना म्यूज़ियम को भेजने के बारे में भी बताया है। तिब्बत के मन्दिरों का वर्णन करते हुए बताया है कि उनमें अधिकांश भारतीय ही लगता है। तिब्बत की सामाजिक व्यवस्था का उल्लेख भी इस पुस्तक में है। वहाँ पुत्र के अभाव में पुत्री को सम्पत्ति मिलती है। यदि कोई संतान न होता तो किसी दूसरे व्यक्ति को उत्तराधिकारी के रूप में चुनता था। इस कृति की तीसरी यात्रा ईरान से सम्बन्धित है जो 'ईरान' नामक पुस्तक के रूप में अलग प्रकाशित है। इसमें तेहरान, इस्फहान, शीराज और मशहद नगरों के वर्णन के साथ वहाँ के गाँवों की विशेषता पर भी प्रकाश डाला गया है। इस संग्रह की चौथी यात्रा अफगानिस्तान की है। यह यात्रा सन् 1937 ई. में की थी। अफगानिस्तान का पूरा विवरण देने के साथ इस देश पर ताजिक, उज़बेक, तुर्कमान जातियों के प्रभाव के बारे में भी बताया है। इन सभी यात्राओं में राहुलजी को बहुत परेशानी का सामना करना पडा फिर भी उन कठिनाइयों से जो रस मिला है, उसका वर्णन रोचक ढंग से किया गया है। यह कृति कोई इतिहास ग्रन्थ नहीं है फिर भी एशियाई देशों के इतिहास और सामाजिक जीवन को प्रामाणिक ढ़ंग से समेटने का

अच्छा प्रयास इसमें है। वास्तव में राहुलजी की इन तिब्बत यात्राओं का उद्देश्य ही बौद्ध ग्रन्थों की खोज था। तिब्बत में भारतीय बौद्ध भिक्षिओं द्वारा जिस ज्ञान भंडार को सुरक्षित रखा गया था उसे वापस लाकर भारतीय ज्ञान और संस्कृति की महानतम सेवा उन्होंने की है। उनकी ये यात्रापरक कृतियाँ इसका सबूत है।

सन्दर्भ सूचि

1.. राहुल सांकृत्यायन; यात्रा के पन्ने; पृ. 46

2. राहुल सांकृत्यायन; यात्रा के पन्ने; पृ.49

3. डॉ.जानकी पाण्डेय; राहुल सांकृत्यायन: घुमक्कड शास्त्र और यात्रावृत्त; पृ.43

4. राहुल सांकृत्यायन; मेरी जीवनयात्रा – भाग दो ; पृ. 52

5. राहुल सांकृत्यायन; मेरी तिब्बत यात्रा; पृ. 52

6. राहुल सांकृत्यायन; मेरी तिब्बत यात्रा; पृ. 34